छाया और छवि की दर्दभरी किन्तु प्रेरणा दायक

Dr Arun Trikha

छाया और छवि तिवारी दो जुड़वां बहिनों ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि उनका एक पुरस्कृत, पेशेवर करियर होगा। दुनिया भर के कई समुदायों में महिलाएं क्या कर सकती हैं इस बारे में भांति भांति के दृष्टिकोण प्रचलित हैं। इन जगहों पर लड़कियों और महिलाओं को उनके भाइयों और पिता के समान अवसर नहीं मिलते हैं, हम एक पुरुष प्रधान समाज की बात कर रहे हैं। जुड़वां बहनों को उनकी नानी सुनैना देवी ने बिहार, भारत के एक छोटे से गांव में पाल पास कर बड़ा किया। दोनों बहिने चार वर्ष की थीं जब उनके पिता ने माँ की निर्मम हत्या कर दी। बच्चियां सहमी हुई सारा दृश्य देखती आ रहीं, पिता धमकाता रहा कि अगर रोईं या शोर मचाया तो उनको भी मार देगा।

यह दर्दनाक कहानी दामोदरपुर गांव की है जो डिस्ट्रिक्ट भोजपुर आरा (Arrah) में पड़ता है। आज की स्थिति का तो पता नहीं लेकिन उन दिनों न बिजली थी, न अस्पताल और न ही योग्य सड़कें थीं। लड़कियों को प्रतिदिन प्राथमिक विद्यालय के लिए 3 मील पैदल चलना पड़ता था। गांव में प्रचलित प्रथा कि थोड़ी सी बेसिक शिक्षा दिलाकर लड़कियों को परिवार की सहायता में लगा दिया जाता था।

भविष्य के लिए बड़े ऊंचे सपने हमारे दिमाग में कभी नहीं आए :

जुड़वां बहिनों ने कभी भविष्य के ऊँचे सपनों के बारे में तो सोचा नहीं था लेकिन Orbis नामक अंतर्राष्ट्रिय चैरिटेबल संस्था, Orbis पार्टनर अखंड ज्योति नेत्र

हस्पताल और इसके संस्थापक मृत्युंजय तिवारी का धन्यवाद् करती हैं जिन्होंने एक उल्लेखनीय मौका दिया गया। अखंड ज्योति नेत्र हस्पताल युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य चैरिटेबल ट्रस्ट का एक यूनिट है। मृतुन्जय तिवारी और अखंड ज्योति नेत्र हस्पताल के बारे में अगर हम यहाँ लिखना आरम्भ कर दें तो शायद इस विषय से भटक जायें। मृत्युंजय जी ने ग्रामीण बिहार, में जो तीन तत्काल ज़रूरतें देखीं वह थीं

1. नेत्र अस्पताल, 2. इसे चलाने के लिए स्वास्थ्य कार्यकर्ता, और 3.लड़कियों की शिक्षा।

इन तीनो ज़रूरतों का निवारण करने के लिए लड़कियों और महिलाओं की क्षमताओं के बारे में जनसमुदाय के दृष्टिकोण को बदलने की जरूरत थी। मृतुन्जय जी स्वयं

एक फुटबाल खिलाडी हैं तो उन्होंने फुटबाल को ही इसका आधार बनाया। इनके विचार में यह खेल बिहार के जनसमुदाय के लिए आइसब्रेकर होगा। बिहार का उस समय का पुरुष प्रधान समाज यह समझ जायेगा कि लड़कियों में लड़कों की ही तरह उच्च उपलब्धि हासिल करने की क्षमता है। "Football to Eyeball" प्रोग्राम ही था जिससे छाया और छवि की नेत्र स्वास्थ्य शिक्षा शुरू हुई। दोनों बहनें अपनी नानी के आशीर्वाद से कार्यक्रम में शामिल हुई। अखंड ज्योति नेत्र हस्पताल के सौजन्य से उन्होंने फ़ुटबॉल खेलना आरम्भ किया और उन्हें व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया गया जिसने अंततः उन्हें optometrist बनने के लिए प्रेरित किया। फुटबॉल खेलने के लिए प्रेरित करने का उद्देश्य था कि

पुरुष प्रधान समाज में जहाँ लड़कियों पर तरह- तरह के प्रतिबंध थे, उन्हें घर से बाहिर लाना था। एक बार बेटियां घर से बाहिर आ गयीं, लड़कों की भांति खेल कूद में भाग लेना आरम्भ कर गयीं तो प्रगति के द्वार खुलने में देर न लगेगी । इस द्वार को खोलने में Orbis समर्थकों ने मदद की; दोनों बहनें एवम उनकी जैसी अनेकों लड़कियों को अपनी क्षमता तक पहुँचाने और पुरुष प्रदान समाज में एक शक्ति बनने के लिए अपने दृढ़ संकल्प का उपयोग किया।

Blindness is a gender issue

छाया और छवि जैसी महिलाओं और लड़कियों को पुरुषों और लड़कों के समान करियर के अवसर देना Gender equality का भाग है। विश्व भर में, 1.1

अरब लोग अंधेपन सहित दृष्टिहीनता के साथ जी रहे हैं। इन लोगों में 55% महिलाएं और लड़कियां हैं जो पुरुषों की तुलना में 112 मिलियन अधिक हैं। कई बाधाएं महिलाओं और पुरुषों दोनों को नेत्र स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंचने से रोकती हैं। हालाँकि, दुनिया के कई हिस्सों में, महिलाओं को आँखों की देखभाल तक पहुँचने में अतिरिक्त बाधाओं का सामना करना पड़ता है जो पुरुषों को नहीं करनी पड़ती।

मृतुन्जय तिवारी बताते हैं कि हम अपने कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं और लड़कियों पर अंधेपन के असमान प्रभाव को दूर करने के लिए काम करते हैं। हमारे दीर्घकालिक देश व्यापी कार्यक्रम, Flying Eye Hospital schemes और Online cybersight

ट्रेनिंग और परामर्श सभी महिलाओं और लड़कियों के लिए आंखों की देखभाल की बेहतर पहुंच प्रदान करने में मदद करते हैं।

अखंड ज्योति नेत्र अस्पताल में छाया और छवि की तरह ही अनेकों Graduate optometrist हैं। Football to eyeball जैसी जुड़वां स्कीम ने जुड़वां बहिनों को Twin-power प्रदान करके Eye health professional बनकर अपने समाज में gender रूढ़िवादिता को तोड़ दिया। Orbis ने विचार लिया कि अस्पताल को कम दृष्टि वाले रोगियों के पुनर्वास की जरूरतों को पूरा करना चाहिए। उनके इस विचार को इतना पसंद किया गया कि छाया ने अकेले ही दो सप्ताह के भीतर अस्पताल में Low vision क्लिनिक स्थापित

कर लिया! छाया की तरह छवि ने भी दिल्ली स्थित डॉ. श्रॉफ के चैरिटी नेत्र अस्पताल में Orbis समर्थित प्रशिक्षण में भाग लिया। डॉ श्रॉफ चैरिटी हॉस्पिटल दरियागंज में 1927 में आरम्भ हुआ था। छवि pediatric counseling के लिए प्रशिक्षित पहली उम्मीदवार थीं। इस अनुभव ने उन्हें सिखाया कि मरीजों के माता-पिता के साथ संबंध कैसे बनाया जाए ताकि वे अपने बच्चे के लिए दृष्टि उपचार स्वीकार करने के लिए राजी हो सकें।

छवि कहती हैं: इस प्रशिक्षण ने मुझे परामर्श के नरम पक्ष को समझने में मदद की जो रोगियों के साथ संबंध बनाने में मदद करता है। जब मरीज परामर्श के बाद सर्जरी के लिए अस्पताल में वापस आता है तो मुझे

बहुत खुशी होती है। हमें एक मरीज की दृष्टि वापिस लाने से अधिक और कोई खुशी नहीं होती,जिसने फिर से देखने में सक्षम होने की सारी उम्मीद खो दी थी । हम जैसी कई ग्रामीण लड़कियों के जीवन को प्रभावित करने के लिए हम donors के आभारी हैं।

छाया और छवि की दर्दभरी किन्तु प्रेरणा दायक कथा :

छाया और छवि तिवारी दो जुड़वां बहिनों ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि उनका एक पुरस्कृत, पेशेवर करियर होगा। दुनिया भर के कई समुदायों में महिलाएं क्या कर सकती हैं इस बारे में भांति भांति के दृष्टिकोण प्रचलित हैं। इन जगहों पर लड़कियों और महिलाओं को उनके भाइयों और पिता के समान अवसर नहीं मिलते हैं, हम एक पुरुष प्रधान समाज की बात

कर रहे हैं। जुड़वां बहनों को उनकी नानी सुनैना देवी ने बिहार, भारत के एक छोटे से गांव में पाल पास कर बड़ा किया। दोनों बहिने चार वर्ष की थीं जब उनके पिता ने माँ की निर्मम हत्या कर दी। बच्चियां सहमी हुई सारा दृश्य देखती आ रहीं, पिता धमकाता रहा कि अगर रोईं या शोर मचाया तो उनको भी मार देगा।

यह दर्दनाक कहानी दामोदरपुर गांव की है जो डिस्ट्रिक्ट भोजपुर आरा (Arrah) में पड़ता है। आज की स्थिति का तो पता नहीं लेकिन उन दिनों न बिजली थी, न अस्पताल और न ही योग्य सड़कें थीं। लड़कियों को प्रतिदिन प्राथमिक विद्यालय के लिए 3 मील पैदल चलना पड़ता था। गांव में प्रचलित प्रथा कि थोड़ी सी

बेसिक शिक्षा दिलाकर लड़कियों को परिवार की सहायता में लगा दिया जाता था।

भविष्य के लिए बड़े ऊंचे सपने हमारे दिमाग में कभी नहीं आए :

जुड़वां बहिनों ने कभी भविष्य के ऊँचे सपनों के बारे में तो सोचा नहीं था लेकिन Orbis नामक अंतर्राष्ट्रिय चैरिटेबल संस्था, Orbis पार्टनर अखंड ज्योति नेत्र हस्पताल और इसके संस्थापक मृत्युंजय तिवारी का धन्यवाद् करती हैं जिन्होंने एक उल्लेखनीय मौका दिया गया। अखंड ज्योति नेत्र हस्पताल युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य चैरिटेबल ट्रस्ट का एक यूनिट है। मृतुन्जय तिवारी और अखंड ज्योति नेत्र हस्पताल के बारे में अगर हम यहाँ लिखना आरम्भ कर दें तो शायद

इस विषय से भटक जायें। मृत्युंजय जी ने ग्रामीण बिहार, में जो तीन तत्काल ज़रूरतें देखीं वह थीं

1. नेत्र अस्पताल, 2. इसे चलाने के लिए स्वास्थ्य कार्यकर्ता, और 3.लड़कियों की शिक्षा।

इन तीनो ज़रूरतों का निवारण करने के लिए लड़कियों और महिलाओं की क्षमताओं के बारे में जनसमुदाय के दृष्टिकोण को बदलने की जरूरत थी। मृतुन्जय जी स्वयं एक फुटबाल खिलाडी हैं तो उन्होंने फुटबाल को ही इसका आधार बनाया। इनके विचार में यह खेल बिहार के जनसमुदाय के लिए आइसब्रेकर होगा। बिहार का उस समय का पुरुष प्रधान समाज यह समझ जायेगा कि लड़कियों में लड़कों की ही तरह उच्च उपलब्धि हासिल करने की क्षमता है। "Football to Eyeball"

प्रोग्राम ही था जिससे छाया और छवि की नेत्र स्वास्थ्य शिक्षा शुरू हुई। दोनों बहनें अपनी नानी के आशीर्वाद से कार्यक्रम में शामिल हुई। अखंड ज्योति नेत्र हस्पताल के सौजन्य से उन्होंने फ़ुटबॉल खेलना आरम्भ किया और उन्हें व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया गया जिसने अंततः उन्हें optometrist बनने के लिए प्रेरित किया।

फुटबॉल खेलने के लिए प्रेरित करने का उद्देश्य था कि पुरुष प्रधान समाज में जहाँ लड़कियों पर तरह- तरह के प्रतिबंध थे, उन्हें घर से बाहिर लाना था। एक बार बेटियां घर से बाहिर आ गयीं, लड़कों की भांति खेल कूद में भाग लेना आरम्भ कर गयीं तो प्रगति के द्वार खुलने में देर न लगेगी । इस द्वार को खोलने में Orbis समर्थकों ने मदद की; दोनों बहनें एवम उनकी जैसी

अनेकों लड़कियों को अपनी क्षमता तक पहुँचाने और पुरुष प्रदान समाज में एक शक्ति बनने के लिए अपने दृढ़ संकल्प का उपयोग किया।

Blindness is a gender issue

छाया और छवि जैसी महिलाओं और लड़कियों को पुरुषों और लड़कों के समान करियर के अवसर देना Gender equality का भाग है। विश्व भर में, 1.1 अरब लोग अंधेपन सहित दृष्टिहीनता के साथ जी रहे हैं। इन लोगों में 55% महिलाएं और लड़कियां हैं जो पुरुषों की तुलना में 112 मिलियन अधिक हैं। कई बाधाएं महिलाओं और पुरुषों दोनों को नेत्र स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंचने से रोकती हैं। हालाँकि, दुनिया के कई हिस्सों में, महिलाओं को आँखों की देखभाल तक

पहुँचने में अतिरिक्त बाधाओं का सामना करना पड़ता है जो पुरुषों को नहीं करनी पड़ती।

मृतुन्जय तिवारी बताते हैं कि हम अपने कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं और लड़कियों पर अंधेपन के असमान प्रभाव को दूर करने के लिए काम करते हैं। हमारे दीर्घकालिक देश व्यापी कार्यक्रम, Flying Eye Hospital schemes और Online cybersight ट्रेनिंग और परामर्श सभी महिलाओं और लड़कियों के लिए आंखों की देखभाल की बेहतर पहुंच प्रदान करने में मदद करते हैं।

अखंड ज्योति नेत्र अस्पताल में छाया और छवि की तरह ही अनेकों Graduate optometrist हैं। Football to eyeball जैसी जुड़वां स्कीम ने जुड़वां बहिनों को

Twin-power प्रदान करके Eye health professional बनकर अपने समाज में gender रूढ़िवादिता को तोड़ दिया। Orbis ने विचार लिया कि अस्पताल को कम दृष्टि वाले रोगियों के पुनर्वास की जरूरतों को पूरा करना चाहिए। उनके इस विचार को इतना पसंद किया गया कि छाया ने अकेले ही दो सप्ताह के भीतर अस्पताल में Low vision क्लिनिक स्थापित कर लिया! छाया की तरह छवि ने भी दिल्ली स्थित डॉ. श्रॉफ के चैरिटी नेत्र अस्पताल में Orbis समर्थित प्रशिक्षण में भाग लिया। डॉ श्रॉफ चैरिटी हॉस्पिटल दरियागंज में 1927 में आरम्भ हुआ था। छवि pediatric counseling के लिए प्रशिक्षित पहली उम्मीदवार थीं। इस अनुभव ने उन्हें सिखाया कि

मरीजों के माता-पिता के साथ संबंध कैसे बनाया जाए ताकि वे अपने बच्चे के लिए दृष्टि उपचार स्वीकार करने के लिए राजी हो सकें।

छवि कहती हैं: इस प्रशिक्षण ने मुझे परामर्श के नरम पक्ष को समझने में मदद की जो रोगियों के साथ संबंध बनाने में मदद करता है। जब मरीज परामर्श के बाद सर्जरी के लिए अस्पताल में वापस आता है तो मुझे बहुत खुशी होती है। हमें एक मरीज की दृष्टि वापिस लाने से अधिक और कोई खुशी नहीं होती,जिसने फिर से देखने में सक्षम होने की सारी उम्मीद खो दी थी । हम जैसी कई ग्रामीण लड़कियों के जीवन को प्रभावित करने के लिए हम donors के आभारी हैं।

समापन